सप्तम् अध्याय

'आलोच्य उपन्यासों का उद्देश्य'

सप्तम अध्याय

'आलोच्य उपन्यासों का उद्देश्य'

7.1 'कल्लो' उपन्यास का उद्देश्य : -

प्राचीन काल से किसी विशिष्ट उद्देश्य से साहित्य लेखन हुआ है। कोई भी साहित्य केवल मनोरंजन का साधन न होकर विचार करने का साधन होता है। प्रारंभिक उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन करना था। परंतु आधुनिक साहित्य का उद्देश्य जीवन के किसी मार्मिक पक्ष को प्रकाशित करना होता है। उद्देश्य व्यक्ति के सामाजिक और पारिवारिक चरित्रोंद्वारा हमें आंदोलित करता है। साहित्य का अपना उद्देश्य होता है, जिसे पढ़कर पाठक संतुष्ट होता है।

सुदर्शन भाटिया जी का 'कल्लो' उपन्यास आजादी के बाद लिखा हुआ उपन्यास है। आजादी के बाद हमारे देश में आर्थिक और सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन हुआ है। लेकिन हमारे देश में अनेक ऐसे गाँव अभी भी है, जहाँ हमारे देश की सरकार की नजर पहुँच नहीं सकी है। अनेक गाँवों में सड़कों की असुविधा है, बच्चों के लिए स्कूल नहीं हैं, डाकखाने तथा अस्पताल की भी असुविधाएँ ही है। गाँव के लोग हमारे सरकार पर निर्भर रहते है कि सरकार यह सारी सुविधाएँ उनके गाँव में जल्द-से-जल्द प्रदान करेगी। लेकिन स्वाधिनता के चौंसठ वर्ष होने पर भी उन्हें इन सारी सुख-सुविधाओं से वंचित ही रहना पडता है।

'कल्लो' उपन्यास में उपन्यास का नायक युवक (परदेसी) द्वारा लेखक ने हिमाचल प्रदेश के ऐसे ही एक गाँव की असुविधाओं को पूरा करने की पहल की। युवक गाँव में रहकर आस-पडोस के दो-एक गाँवों के लोगों की सहायता लेकर सडक बनवाता है। जिससे लोगों को एक-दूसरे गाँवों में आना-जाना आसान हो गया। यहाँ तक की युवक उस गाँव में बच्चों के लिए स्कूल खोलता है। प्रौढ़ शिक्षा अभियान, डाकखाने तथा अस्पताल की सुविधा भी करवाता है। इससे उसकी समाजसेवी वृत्ति दिखाई देती है। युवक अपनी बात इतनी प्रभावी ढंग से कहता है कि, लोगों को वह बात तुरंत समझ में आती है। और उसका प्रभाव लोगों पर पूर्णतया दिखाई देता है। युवक के मन में ग्रामीण लोगों के प्रति गहरी संवेदना दिखाई देती है। उस गाँव में रहकर वह पूरे गाँव का कायापालट कर देता है।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

यहाँ लेखक का प्रमुख उद्देश्य ग्रामसुधार करना है। युवक ग्राम सुधार कर सकता है। 'कल्लो' में चित्रित युवक (परदेसी) के माध्यम से लेखक ने इसे चित्रित किया है।

7.2 'सुलगती बर्फ' उपन्यास का उद्देश्य :-

साहित्य कभी निरूद्देश्य नहीं होता। सोद्देश्यता ही उसका प्रयोजन है। और गद्य में लिखा कथा साहित्य इस प्रयोजन की पूर्ति का सबसे सबल व लोकप्रिय माध्यम है। इसलिए उद्देश्य तत्व को ही उपन्यास रचना का प्राणतत्व कहा जाता है। जैसे प्राण के बिना शरीर व्यर्थ है, उसी तरह उद्देश्य के बिना रचना निरर्थक है। सुदर्शन भाटिया जी का 'सुलगती बर्फ' यह दूसरा सामाजिक उपन्यास है। इसका प्रमुख उद्देश्य प्रेम और जीवन संघर्ष है। प्रेम एक ऐसी प्रवृत्ति है, जो अनन्तकाल से मनुष्य-जीवन को संचालित करती आ रही है। 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में अलग-अलग पात्रों के माध्यम से प्रेम की अन्विति दिखाई गई है। और उपन्यास की इस उद्देश्य की कसौटी पर उपन्यास का नायक गिरीश और नायिका पुष्पा खरे उतरते हुए दिखाई देते हैं।

उपन्यास का मुख्य पात्र गिरीश स्वभावतः कवि है। इसलिए अनेक पन्नों पर काव्यमय भाषा का प्रयोग किया है, जो उपन्यास के अतिरिक्त आकर्षण तथा निरवाह प्रदान करता है। इस तथ्य से लेखक की भारतीय धर्म संस्कृति, दर्शन-चिंतन तथा साहित्य के प्रति गहन अभिरूचि तथा लगाव का प्रदर्शन हुआ है। सांस्कृतिक विलक्षणताओं को साहित्यिक आर्द्रता के साथ मजबूत प्रस्तुतीकरण उपन्यास लेखन को वाकई अद्भुत आयाम प्रदान कर गया। भारतीय संस्कृति की कलात्मक धडकन को सदाचारी पात्रों के माध्यम से पाठक साफ-साफ अनुभूत कर सकते हैं।

विवेच्य उपन्यास में गिरीश एक सुशिक्षित पात्र है। जो दहेज लेने का विरोधी है। जब गिरीश और सुमन की शादी तय हो जाती है, तब उसके पिता ढेर सारा दहेज माँगते है। सुमन के पिता भी उनको दहेज देने के लिए तैयार हो जाते है। लेकिन गिरीश उनसे मिलकर कहता है, कि "यदि आपने दहेज के रूप में नगद या सामान, कुछ भी देने की चेष्टा की तो मैं सुमन को आपके घर पर ही छोड दूँगा। यह मेरा अंतिम निर्णय है। आप तो धनी हैं, सब कुछ दे सकते हैं। मगर उनका क्या होगा, जिनकी तीन-तीन, चार-चार बेटियाँ हैं और घर में खाने तक को कुछ नहीं।"[1] इससे यह स्पष्ट होता है, कि लेखक का मूल उद्देश्य समाज में चल रही दहेज प्रथा से उत्पन्न स्थिति को दर्शाना है।

---

1. सुदर्शन भाटिया - सुलगती बर्फ, पृ. 117.

7.3 उपन्यास साहित्य के विकास में सुदर्शन भाटिया का योगदान :-

भारत देश देहातों का देश हैं। अत: स्वातंत्र्योत्तर काल में ग्रामीण जीवन का चित्रण पाठकों का ध्यान आकर्षित करता आया है। प्रेमचंद के काल से ग्रामीण जीवन का चित्रण होता आया है। डॉ. लालसाहब सिंह ने इस संबंध में कहा है - "प्रेमचंद और उनके समकालीन लेखकों ने उपन्यासों के माध्यम से ग्रामीण जीवन का उद्‌घाटन किया है ..... उसकी समस्याएँ ग्रामीण भारत की समष्टिगत समस्याएँ थीं। तत्कालीन उपन्यासकारों ने ग्राम्य-समस्याओं का गहन अध्ययन किया था और उन्हीं समस्याओं का चित्रण अपनी रचनाओं में किया।"[1] उसी प्रकार स्वतंत्रता के बाद साहित्यकारों ने आँचलिक अथवा जनपद का चित्रण किया है। नागार्जुन, फणीश्वरनाथ 'रेणु', राही मासूम रजा आदि ने भारतीय ग्रामजीवन प्रभावी ढंग से अंकित किया है। ग्राम्य जीवन का सामाजिक परिवेश इन उपन्यासों में चित्रित हुआ है।

सुदर्शन भाटिया जी ने 'कल्लो' उपन्यास के माध्यम से पहाडी अँचल का चित्रण किया है। स्वयं लेखक हिमाचल प्रदेश जैसे पहाडी प्रांत में कार्यरत रहे। अत: उनके विवेच्य उपन्यास में पहाडी जीवन चित्रित हुआ है। इसप्रकार का चित्रण अन्य उपन्यासों में अपवादात्मक रूप में पाया जाता है। पाठक पहाडी समस्याओं से अवगत हो जाते है। पहाडी जीवन की यह अभिव्यक्ति सुदर्शन भाटिया के हिंदी साहित्य के लिए अनोखी देन माननी चाहिए।

आधुनिक काल में अनेक साहित्यकारों ने अपनी उत्कृष्ट कृतियों से हिंदी भाषा एवं साहित्य को समृद्‌ध किया है। हिंदी के काव्य-भंडार में तो अभिवृद्‌धि हुई है। अनेक लेखक कों ने खडी बोली हिंदी में गद्‌य-रचना कर हिंदी गद्‌य साहित्य को श्री संपन्न किया है। परिणाम-स्वरूप गद्‌य की विविध विधाओं यथा कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना,जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, पत्र-साहित्य आदि का सम्यक विकास हुआ है। आधुनिक युग के हिंदी साहित्यकारों में से सुदर्शन भाटिया एक है।

भाटिया जी पेशे से इंजीनियर होते हुए भी उन्होंने अनेक उपन्यास, कहानी, लघुकथा, जीवनी इतना ही नहीं इतिहास-धर्म एवं संस्कृति, पर्यावरण, स्वास्थ्य आदि पर भी बहुत सारा लेखन किया है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में 'कल्लो' और 'सुलगती बर्फ' उपन्यास लिखें।

---

1. डॉ. लाल साहब सिंह - स्वातंत्र्योत्मतर हिंदी उपन्यासों में युग-बोध, पृ. 220.

'कल्लो' उपन्यास में भाटिया जी ने ग्रामीण समस्याओं को प्रतिबिंबित किया है। आज के युग में देहाती जीवन में जो समस्याएँ होती है, उसे दूर करने की क्षमता देहाती लोगों के पास नहीं होती। उन्हें पथ-प्रदर्शन करने का काम विवेच्य उपन्यास का युवक कर सकता है। समाज परिवर्तन की दृष्टि शहर के शिक्षित लोगों के पास होती है। भाटिया जी ने ऐसा ही एक युवक चित्रित किया है, जो ग्रामीण जीवन में परिवर्तन चाहता है।

भाटिया जी का दूसरा सामाजिक उपन्यास 'सुलगती बर्फ' उपन्यास में प्रेम और जीवन संघर्ष यह महत्त्वपूर्ण लक्ष्य रखा गया है। जिसे लेखक ने उपन्यास के नायक गिरीश के माध्यम से पूरा किया है। उपन्यास अन्तरमन की तरंगों से रूपायित करते हुए जीवन की विसंगतियों का यथार्थपरक चित्रण प्रस्तुत करता है। साथ ही अनपेक्षित स्थितियों की आहट को भी कलात्मक सौष्ठव के साथ समंजित करता है। प्रेम की परिणति विवाह में होती है तथा सुखांत जीवन दर्शन आस्थावादी स्वर का आभास देता है। गिरीश और पुष्पा, तथा सतीश और सुमन के विवाह की घटना को उपन्यास में चित्रित किया है। अत: हम निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि, उनके समग्र कथा साहित्य की देन ही भाटिया जी का हिंदी साहित्य को दिया गया महान योगदान है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्षत: बहुआयामी लेखक सुदर्शन भाटिया जी के 'कल्लो' उपन्यास का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण समस्याओं को दूर करना हैं। जिसे दूर करने के लिए लेखक ने एक आदर्श युवक का चित्रण किया है। जो युवक गाँव-गाँव जाकर समाज सुधार करता है। उस गाँव में जो भी कोई समस्या हो, उसे दूर करता है। इसप्रकार वह 'कल्लो' के गाँव जाता है। वहाँ भी वह अपनी प्रखर बुद्धि से गाँववालों का दिल जीत लेता है, और उस गाँव में सड़क बनवाना बच्चों के लिए स्कूल खोलता है, डाकखाने तथा अस्पताल की सुविधा भी करता है। इससे उस गाँव में एक नई जान आ जाती है।

भाटिया जी का दूसरा उपन्यास 'सुलगती बर्फ' का मुख्य उद्देश्य प्रेम और जीवन संघर्ष दिखाई देता है। गिरीश पुष्पा से प्रेम करता है, किंतु उसके पिताजी उसका विवाह सुमन से तय करते है, जिसे वह अपनी बहन मानता है। लेकिन अंत में गिरीश की सूझबूझ से यह पता चलता है, कि गिरीश और सुमन भाई-बहन है। और अंत में गिरीश और पुष्पा का विवाह हो जाता है।

-----x-----